# पुस्तकालय
# क्या कहता है एनसीएफ – 2005?

पुस्तकालयों की प्रासंगिकता एवं महत्त्व पर एनसीईआरटी के तत्त्वावधान में तैयार एनसीएफ–2005 में भी कहा गया है। पुस्तकालय कैसे शिक्षण का अहम हिस्सा बन सकते हैं? पुस्तकालय को अधिगम, आनंद और तन्मयता के साधन के रूप में इस्तेमाल करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए और शिक्षकों को भी इसके लिए प्रशिक्षित किया जाए। पुस्तकालय के उपयोग के लिए समय का बंधन नहीं हो। सामुदायिक और सरकारी पुस्तकालय को स्कूली पुस्तकालय के नेटवर्क से जोड़ा जाए। पठित पुस्तकों पर चर्चा करने, सुनने और सुनाने के लिए पुस्तकालय का उपयोग हो। इन सबके अलावा पुस्तकालय में रोशनी और बैठने की अच्छी व्यवस्था हो।

प्रस्तुत है एनसीएफ –2005 की पुस्तकालय को लेकर अनुशंसाएं–

स्कूल पुस्तकालय काफ़ी समय से नीतिगत सुझावों का हिस्सा रहे हैं, लेकिन आज भी स्कूलों में चालू हालत में पुस्तकालय बिरले ही देखने को मिलते हैं। यह ज़रूरी है कि भविष्य में योजनाएं बनाते समय पुस्तकालय को स्कूल के हर स्तर के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में देखा जाए। शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को ही इस बात के लिए प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है कि यह पुस्तकालय को अधिगम, आनंद एवं तन्मयता के साधन के रूप में इस्तेमाल करें। स्कूल पुस्तकालय की संकल्पना एक ऐसे बौद्धिक स्थल के रूप में की जानी चाहिए जहां शिक्षक, विद्यार्थी और निकटस्थ समुदाय के लोग ज्ञान के गहरे अर्थों और कल्पनाशीलता की तलाश में आएं। किताबों के सूचीकरण और अन्य व्यवस्थाओं को वहां इस प्रकार विकसित किया जाना चाहिए कि बच्चे आत्मनिर्भर रूप से पुस्तकालय का उपयोग कर पाएं। किताबों और पत्रिकाओं के अलावा, पुस्तकालय में सूचना तकनीक के नए आयामों की सुविधा होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी विस्तृत विश्व से जुड़ पाएं। नियोजन के आरंभिक चरणों में खण्ड के स्तर या संकुल स्तर पर पुस्तकालयों को समृद्ध किया जा सकता है। भविष्य में भारत को प्रत्येक स्कूल में पुस्तकालय स्थापित करने की तरफ़ क़दम उठाने चाहिए, चाहे स्कूल किसी भी स्तर का हो। देश के विभिन्न हिस्सों में, ग्रामीण इलाकों में सामुदायिक पुस्तकालय चल रहे हैं और ज़िलों के मुख्यालयों में भी सरकारी पुस्तकालय की व्यवस्था है। भविष्य में नियोजन की यह मांग होगी कि इस तरह की संस्थाओं को स्कूली पुस्तकालयों के नेटवर्क में जोड़ दिया जाए जिससे संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो पाए। राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन को अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध करवाए जा सकते हैं कि वह स्कूली पुस्तकालयों के नेटवर्क की संकल्पना में एक संयोजक संस्था की तरह काम करें और नेटवर्क बन जाने के बाद उसके रखरखाव पर भी ध्यान दें।

दिन–प्रतिदिन के स्कूल जीवन में पुस्तकालय कई प्रकार के उद्देश्य पूरे करते हैं। पुस्तकालय के उपयोग को एक ही घंटे तक सीमित करने से बच्चों के पठन के प्रति रुचि जगने में मुश्किल आती है। विद्यार्थियों को किताबें घर ले जाने की सुविधा दी जानी चाहिए। पुस्तकालय संचालन, प्रबंधन और इस्तेमाल के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण से व्यवस्था संबंधी स्थितियों की मांग से निपटा जा सकता है। जहां स्कूल भवन में अलग से पुस्तकालय कक्ष की व्यवस्था हो, वहां एक सकारात्मक लोकाचार के लिए रोशनी और बैठने की अच्छी व्यवस्था की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है। यह भी संभव हो सकता है कि शिक्षक, पुस्तकालय के संसाधनों के इस्तेमाल द्वारा पुस्तकालय में कक्षा आयोजित करें, पुस्तकालय के अंदर कक्षा लेने या पुस्तकालय से पर्याप्त पुस्तकें कक्षा में ले जाने और इसके अलावा, चर्चा करने, किसी शिल्पकार को सुनने या कहानी सुनाने के लिए भी पुस्तकालय का इस्तेमाल किया जा सकता है। शिक्षकों को समर्थन देने के लिए संकुल एवं खण्ड स्तर पर ऐसे संसाधनात्मक पुस्तकालय बना कर पाठ्यचर्या के नवीनीकरण को मज़बूत किया जा सकता है। हर खण्ड को किसी एक विषय क्षेत्र में विशिष्ट बनाया जाए ताकि जिले में पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हो जाएं।

**किताबों और पत्रिकाओं के अलावा, पुस्तकालय में सूचना तकनीक के नए आयामों की सुविधा होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी विस्तृत विश्व से जुड़ पाए। नियोजन के आरंभिक चरणों में खण्ड के स्तर या संकुल स्तर पर पुस्तकालयों को समृद्ध किया जा सकता है। भविष्य में भारत को प्रत्येक स्कूल में पुस्तकालय स्थापित करने की तरफ़ कदम उठाने चाहिए, चाहे स्कूल किसी भी स्तर का हो।**